❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इषं स्तोतृभ्य आ भर।।

सामवेद 971

हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! स्तोताओं के लिए अन्न और धन प्रदान कर। O the Bounteous Lord ! Bestow all kinds of food and wealth for your divotces.

वर्ष 40, अंक 26 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 24 अप्रैल, 2017 से रविवार 30 अप्रैल, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

धर्म के नाम पर अधर्म क्यों ?

– प्रकाश आर्य
मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

.......इस्लाम परमात्मा को साकार नहीं मानता है। फिर वह अजान से आवाज देकर किसको सुनाना चाहते हैं ? वैसे भी धर्म प्रदर्शन का विषय नहीं, मात्र बोलचाल का नहीं है, वह तो आन्तरिक विषय व मौन कर्म है। धर्म आचरण का विषय है "धारणात्धर्म इत्याहुः "जो धारण किया जावे, वह धर्म है। ..... धर्म कहता है "आत्मनः प्रतिकूलानी परेषां न समाचरेत्।" अर्थात् हम दूसरे से अपनी आत्मा के समान व्यवहार करें। जो अपनी आत्मा को अच्छा लगता है वैसा व्यवहार दूसरों से करें। जो व्यवहार अपने को अच्छा नहीं लगता वह व्यवहार हम दूसरों से न करें। ......

भारत एक प्रजातन्त्रीय देश है जिसके नागरिकों को अनेक प्रकार की स्वतन्त्रता और अधिकार संविधान के अन्तर्गत दिए गए हैं। प्राप्त अधिकारों व स्वतन्त्रता के साथ ही संवैधानिक रूप से कुछ कर्त्तव्यों और अवश्य पालनीय सामाजिक नियमों के मानने का निर्देश में संविधान में निहित है। अधिकार और कर्त्तव्य का जब तब ईमानदारी से पालन होता है, किसी की उपेक्षा या स्वतन्त्रता के नाम पर शोषण अतिक्रमण नहीं होता है तब तक ही किसी राष्ट्र की व्यवस्था व्यवस्थित रह सकती है।

व्यक्ति व किसी भी संगठन से बड़ा राष्ट्र होता है। ''राष्ट्र प्राणों से बड़ा होता है, हम मिटते हैं तो राष्ट्र खड़ा होता है।'' शास्त्रों ने, विद्वानों ने धर्म की 5 प्रकार से व्याख्या की है। व्यक्तिगत धर्म, पारिवारिक धर्म, सामाजिक धर्म, राष्ट्रीय धर्म, वैश्विक धर्म। इसलिए व्यक्तिगत धर्म से बड़ा राष्ट्रीय धर्म होता है। यही राष्ट्रीय धर्म प्रत्येक नागरिक के लिए सर्वोपरि है और होना भी चाहिए।

किन्तु अतीत साक्षी है प्रजातन्त्र के इस देश में महत्त्वाकांक्षी विचारों वाली राजनीति ने संविधान के आदर्शों, उसकी मान्यताओं को, मानवीय, राष्ट्रीय अधिकारों की अवहेलना करने वाले व्यक्तियों का पोषण, और राष्ट्रीयता का शोषण किया है। अपने स्वार्थ में मजहबी विचारधाराओं को आश्रय देकर उनकी अनुचित मांगों व कर्त्तव्यों को मात्र अपना समर्थन जुटाने में वे उचित, अनुचित सब मान्य करते रहे। इसका लाभ उठाते हुए जब किसी को कोई बात मनवानी हो तो उसके पक्ष में धर्म रूपी शस्त्र काम आता है। किसी बात को मानने या किसी को न मानने में दलील देकर, धर्म की दुहाई देकर सबको चुप करवा दिया जाता है।

इस प्रकार स्वार्थ जहां आता है, वहां अपनी बात को धर्म के नाम पर भुनाने का हथकण्डा वर्षों से चल रहा है। इसी साम्प्रदायिकता का और तुष्टिकरण का ही परिणाम पाकिस्तान का जन्म है।

जिस माटी में पले-बड़े हुए उस माटी से अपने मजहब या धर्म को राष्ट्र से बड़ा बताकर कोई भी कार्य को महत्त्व देना सरासर गलत है।

आज देश की जनसंख्या बेहिसाब बढ़ती जा रही है, देश का एक तबका सन्तान वृद्धि की उपेक्षा कर तेजी से देश की व्यवस्था को बिगाड़ रहा है। देश की आर्थिक स्थिति, बेरोजगारी, आवास व्यवस्था, खाद्यान्न व्यवस्था सबको प्रभावित कर राष्ट्र हित के विरुद्ध कार्य कर रहा है। जबकि शासन छोटे परिवार के नाम पर अनेक प्रकार के प्रयत्न करता है। किन्तु वही सबकुछ हो धर्म के नाम पर कुछ विचारधारा द्वारा राष्ट्र की उपेक्षा की जा रही है। क्या यह मजहबी धर्म की आड़ में राष्ट्रीय धर्म की उपेक्षा और असहयोग नहीं हो रहा है ? क्या अपनी भावनाओं के कारण राष्ट्र की करोड़ों जनता की समस्याओं को कुचलते हुए राष्ट्र को क्षति पहुंचाना क्या धर्म है ?

हाल ही में सोनू निगम ने मस्जिद से माईक पर आने वाली आवाज के सम्बन्ध में आपत्ति उठाई। इस पर तरह-तरह की चर्चा और विवाद खड़ा हो गया। उसकी पीड़ा जो करोड़ों-करोड़ों भारतीयों की है, कोई उस सत्य को स्वीकार नहीं करना चाहता है। अन्यान्य कारणों से इस प्रकार से होने वाले उस सामाजिक कष्ट को अनदेखा कर कोई सही कहना नहीं चाहता।

यह सरासर धर्म के नाम पर अधर्म है, इस्लाम परमात्मा को साकार नहीं मानता है। फिर वह अजान से आवाज देकर किसको सुनाना चाहते हैं ? वैसे भी धर्म प्रदर्शन का विषय नहीं, मात्र बोलचाल का नहीं है, वह तो आन्तरिक विषय व मौन कर्म है। धर्म आचरण का विषय है "धारणात्धर्म इत्याहुः" जो धारण किया जावे, वह धर्म है। प्रदर्शन या मात्र बाहरी चर्चा धर्म का विषय नहीं, वह तो आत्मा का आन्तरिक और शान्त प्रयास है। परमात्मा की उपासना, प्रार्थना, शान्त चित्त से, एकाग्र मन से की जाती है। भारत में प्रत्येक को अपनी धार्मिक मान्यता को करने की स्वतन्त्रता है। परन्तु धर्म यह नहीं कहता कि अपनी मान्यता के लिए किसी दूसरे को परेशान करना चाहिए। यह धर्म नहीं अधर्म है। धर्म कहता है "आत्मनः प्रतिकूलानी परेषां न समाचरेत्।" अर्थात् हम दूसरे से अपनी आत्मा के समान व्यवहार करें। जो अपनी आत्मा को अच्छा लगता है वैसा व्यवहार दूसरों से करें। जो व्यवहार अपने को अच्छा नहीं लगता वह व्यवहार हम दूसरों से न करें।

अजान देना है तो देवें इसमें किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। किन्तु यह नहीं होना चाहिए कि बड़ी ऊँची आवाज में कानों को कष्ट देती आवाज में अजान जो औरों के लिए उपयोगी नहीं है कष्टदायी है, वह करना ही धर्म है।

विशेषकर सुबह 5 बजे, 4.30 बजे होने वाली अजान से अनेक व्यक्ति प्रभावित होते हैं। कई व्यक्ति बीमारी से जूझ रहे हैं, उन्हें डॉक्टर ने आराम की सलाह दी होती है। रात में नींद नहीं आती, नींद की दवा, गोली लेकर सोते हैं जब सुबह-सुबह नींद आती है, तो अजान से बीच में नींद खुल जाती है। यह उनके लिए कष्ट का कारण है। बीमार व्यक्ति को पूर्ण आराम की आवश्यकता होती है, उसके अभाव में वह कभी स्वस्थ हो ही नहीं पायेगा, ऐसा विघ्नकारी कर्म धर्म नहीं है।

कोई व्यक्ति मेहनत, मजदूरी करके काम से लौटकर देर रात में सोता है, सुबह फिर काम करने जाता है, शरीर को आराम जरूरी है अन्यथा उस पर बुरा असर होगा पर अजान की आवाज उसे समय से पहले

– शेष पृष्ठ 5 पर

घर-घर यज्ञ – हर घर यज्ञ योजना के अन्तर्गत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

यज्ञ की विधि – प्रक्रिया – एकरूपता– विशेषताएं तथा यज्ञ विज्ञान के सामान्य ज्ञान हेतु

पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर
22 मई 2017 से 27 मई 2017

समय : प्रतिदिन प्रातः 7 से 8:30 बजे **स्थान :** एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-27

आर्यजन परिवार सहित आमन्त्रित हैं। प्रशिक्षण शिविर में न्यूनतम पति-पत्नी दोनों का सम्मिलित होना अनिवार्य है। इच्छुक परिवार शीघ्र सम्पर्क करें। यज्ञ सैट सीमित होने के कारण स्थान सीमित हैं। यज्ञ प्रशिक्षण हेतु सभी लोगों को यज्ञ कुण्ड का सैट दिया जाएगा। 10 वर्ष की आयु के बालक को भी प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध होगी। ऐसे दम्पति जिनके बच्चे छोटे हैं, के लिए क्रैच/खेलने की व्यवस्था की गई है।

शिविर समापन : रविवार 28 मई, 2017 सायं 5 बजे

अधिक जानकारी के लिए सह संयोजक श्री नीरज आर्य जी (मो.9810102856) पर सम्पर्क करें।

निवेदक

धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	सतीश चड्ढा	ए. के. धवन	अरविन्द नागपाल
प्रधान	महामन्त्री	मुख्य संयोजक	प्रधान	प्रबन्धक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा		9540041414	एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल	

वेद-स्वाध्याय

यज्ञ महिमा

ऋतं शंसन्त ऋजु दीध्याना दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः।
विप्रं पदमङ्गिरसो दधाना यज्ञस्य धाम प्रमंम। मनन्त।। -ऋ. 10/67/2
ऋषिः **अयास्यः।।** देवता - **बृहस्पतिः।।** छन्दः **निचृत्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **ऋतं शंसन्तः**=सत्य ही कहने वाले, **ऋजुदीध्यानाः**=अकुटिल ध्यान करने वाले, **असुरस्य**=प्रज्ञावाले **दिवः**= दिव के, 'द्यौ' के **वीराः पुत्रासः**= वीर पुत्र, **विप्रं पदंधानाः**= और जो ज्ञानमय या व्यापक पद को धारण किये हुए हैं, ऐसे **अङ्गिरसः**=अङ्गिरस लोग यज्ञस्य प्रथमं धाम= यज्ञ के परम मुख्य स्थान को **मनन्त**= जानते हैं।

विनय - 'यज्ञ-यज्ञ' सब कहते हैं, परन्तु यज्ञ के मूलतत्त्व को जानने वाले कोई विरले ही होते हैं। हम तो इतना जानते हैं कि जगत्-हित के लिए स्वार्थत्याग के कार्य करना यज्ञ है। इतना ठीक भी है, परन्तु यज्ञ के प्रथम रूप से हम बहुत दूर हैं। यदि हमें कहीं वह रूप दीख जाए तब तो हम देख लें कि यज्ञ ही हमारा प्राण है, हमारा जीवन है; यज्ञ तो हमारे एक-एक श्वास में होना चाहिए। इस यज्ञ के 'प्रथम धाम' (मुख्य स्थान) को साक्षात् देख लेते हैं वे अंगिरस कहाते हैं; क्योंकि ऐसे लोग इस जगत्-शरीर के अङ्गों के रस होते हैं। ये वे महात्मा पुरुष होते हैं जो संसार को ठीक रास्ते पर ले-जाते हुए संसार के प्राणरूप होते हैं। संसार में जो पाप, अधर्म ओर स्वार्थ की शक्तियाँ प्रवृत्त हो रही हैं उनसे संसार का जीवन-रस सूख जाए यदि ये 'अङ्गिरस्' उसमें निरन्तर धर्म-धारा न बहाते रहें। इन अङ्गिरसों को बार-बार प्रणाम है।

परन्तु हमें तो यह जानना चाहिए कि ये 'अङ्गिरस्' महात्मा कैसे बनते हैं? इनके लक्षण क्या है।? इनके चार लक्ष्य हैं- (1) ये सत्य ही बोलते है, ये सत्य का ही वर्णन करते हैं। (2) केवल इनकी वाणी में ही सत्य नहीं होता किन्तु इनके ध्यान व विचार में भी कुटिलता नहीं आने पाती; इनके विचार में-मनमें-भी असत्यता नहीं आती(अतएव) इनकी बुद्धि इतनी सच्ची और प्रकाशपूर्ण होती है कि इन्हें समष्टि-बुद्धि-रूप जो 'द्यौ' है उसके पुत्र कहना चाहिए; और (3) ये वीर-पुत्र होते है, क्योंकि संसार सदा अज्ञान-शत्रु पर विजय पाने के लिए अग्रसर रहता हे, (4) और ये 'द्यौ के पुत्र' अपने में 'विप्रपद' को, ज्ञानमय व्यापक पद को धारण किये होते हैं- भगवान् को, भगवान् के एक ज्ञानमय व्यापक रूप को, अपने में धारण किये फिरते हैं।

हे यज्ञकर्मो द्वारा ऊँचे चढ़ने की इच्छा रखने वाले और यत्न करने वाले भाइयो! अङ्गिरसों के इन चार लक्षणों को अपने में रमाते चलो, रमाते हुए चढ़ते चलो।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

बात सिर्फ अजान तक नहीं

आज कुछ लोग सोनू निगम के साथ हैं और कुछ उनके खिलाफ, लेकिन कोई इस बात को नहीं समझ रहा कि सोनू निगम की दिक्कत अजान से नहीं लाउडस्पीकर से है। इसके बाद भी लोग इसे विवादित ब्यान मान रहे हैं और इसे धर्म से जोड़कर देखा जा रहा है। जबकि यह विषय धर्म से ज्यादा परेशानी का विषय है। इस धार्मिक परम्परा को अब आधुनिक परेशानी के रूप में देखा जाना चाहिए। यद्यपि सोनू निगम कोई पहला व्यक्ति नहीं है जो इतना बवाल हो। इससे पहले तो कबीरदास भी कह चुके हैं कि ***''जाने तेरा साहिब कैसा है। मस्जिद भीतर मुल्ला पुकारै, क्या साहिब तेरा बहिरा है?''*** एक अन्य दोहे में भी कबीर दास जी ने कहा है ***''कांकर पाथर जोरि कै मस्जिद लई बनाए, जा चढ़ि मुल्ला बाग दे का बहिरा हुआ खुदाय।''*** ***''पाहन पूजें हरि मिलें तो मैं पूजूं पहाड, ताते ये चाकी भली पीस खाय संसार।''***

सोनू निगम ने जो कहा, हो सकता है उस पर मचा शोर एक दो दिन में थम जाए, लेकिन इस बात पर एक बार शांति से बहस की जरूरत है। बात अजान की नहीं है बात लाउडस्पीकर की है। उसका यह कहना भी सही है कि जब पहली बार अजान पढ़ी गई थी तब वाकई किस लाउडस्पीकर का इस्तेमाल नहीं किया गया था। लाउडस्पीकर का इस्तेमाल 1900 के दशक में शुरू हुआ था और मस्जिदों में इसका इस्तेमाल 1930 से किया जाने लगा। आज जो लोग इस तार्किक बहस को धर्म के चश्मे से देखकर विवादित ब्यान बता रहे हैं। शायद वह लोग किसी पूर्वाग्रह का शिकार होकर इस सामाजिक परेशानी से ध्यान भटकाना चाह रहे हैं।

यदि आंकड़े देखें तो पिछले कुछ सालों में देश के अन्दर जितनी भी सांप्रदायिक हिंसा हुई, उसमें हर पांचवीं हिंसा की घटना लाउडस्पीकर से निकली नफरत की आवाज से हुयी है। कश्मीर में पत्थरबाजों को उकसाने से लेकर अनगिनत अफवाहनुमा किस्सों से गुजरिये तो पता चलेगा कि कई दंगों की जड़ों में लाउडस्पीकर का इस्तेमाल हुआ है। बात सिर्फ दंगों तक ही सीमित नहीं है। कई बार धार्मिक कार्यक्रमों या जागरण जैसे आयोजनों में दिन-रात इतनी ऊंची आवाज में भक्ति गीत-संगीत बजाया जाता है कि आसपास के घरों में लोगों के लिए सो पाना और बच्चों के लिए पढ़ाई-लिखाई करना मुश्किल हो जाता है। मैं खुद अपने अनुभव के तौर पर कहता हूँ पिछले दिनों मेरे मोहल्ले में भागवत कथा के नाम पर कई दिनों तक जो शोर रहा वह वाकई में बर्दास्त के बाहर था। पता नहीं क्यों लोग इस शोर को धर्म से जोड़कर देखते हैं।

कई बार जागरण के नाम पर पूरी रात शोर मचाया जाता है। आप सोचिये कितनी परेशानी होती होगी। रमजान के माह में तो एक माह तक हजरात दो बजकर 30 मिनट हो चुके हैं। जल्दी उठिए सेहरी का समय हो गया है। तभी दूसरे लाउडस्पीकर से आवाज आती है। हजरात दो बजकर 35 मिनट हो चुके हैं। तीसरा लाउडस्पीकर कहता है। नींद से बेदार हो जाइए और सेहरी खा लीजिए। ये सिलसिला तब तक चलता रहता है जब तक सेहरी का टाइम खत्म न हो जाए। जिस तरह से माइक की गूंज होती है उससे तो मुर्दे भी उठकर सेहरी करने लगें। आखिर यह सब क्यों और किसके लिए किया जा रहा है जबकि विश्व के कई देशों में इस प्रकार से लाउडस्पीकर का प्रयोग करना मना है। जर्मन के कोलोन शहर में जब कोलोन सेंट्रल मस्जिद बनने की बात छिड़ी थी तो आस-पास रहने वालों ने इसका जमकर विरोध किया था। अंततः मस्जिद बनाने वाले लोगों को इस बात को मानना पड़ा कि मस्जिद में लाउडस्पीकर नहीं लगाए जाएंगे।

इसके अलावा, 2008 में ऑक्सफोर्ड इंग्लैंड में मस्जिद से आने वाली आवाज का विरोध किया गया था। इलेक्ट्रॉनिक उपकरण का इस्तेमाल पूजा के लिए करना सही नहीं है और इससे पड़ोसियों को काफी दिक्कत होती है। 2004 में मिशिगन के अल इस्लाह मस्जिद रातोंरात चर्चा में आ गयी थी जब मस्जिद के लोगों ने लाउडस्पीकर इस्तेमाल करने की परमीशन मांगी। कहा गया कि यहां चर्च की घंटियां बजती हैं और इसे भी ध्वनि प्रदूषण में क्यों नहीं गिना जाता। नाइजीरिया के लागोस शहर, नीदरलैंड्स, जर्मनी, स्विट्जरलैंड, नार्वे, बेल्जियम, फ्रांस, यूके और आस्ट्रिया सहित मुंबई में भी लाउडस्पीकर के इस्तेमाल सीमित हैं। यहां रात 10 बजे से सुबह 6 बजे के बीच लाउडस्पीकर का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। 2016 में ये बैन इजराइल में भी लगा दिया गया। इजराइल के धर्म गुरुओं ने भी इस फैसले को सही माना। बेशक इसमें सिर्फ अजान का नाम नहीं आना चाहिए, मंदिरों के जगराते भी वही काम करते हैं और चर्च के बड़े घंटे भी। गणपति और नवरात्रि के दौरान भी यही होता है जब फिल्मी गानों के राग पर भजन के बोल किस तरह की पूजा में काम आते हैं इसका तो मुझे नहीं पता, लेकिन आम लोगों को इससे कितनी परेशानी होती है यह जरूर पता है। मौन, ध्यान, योग, प्रार्थना आदि कोई भी शोर को स्वीकृति नहीं देता। यही नहीं कोई भी मत-पंथ या मजहब लाउडस्पीकर बजाकर दूसरों की शान्ति में विघ्न डालने की इजाजत नही देता है।

जरा कल्पना कीजिये कि जब 19वीं सदी के अन्त में लाउडस्पीकर का ईजाद करने वाले जश्न फिलिप रेइस ने क्या ये सोचा होगा कि 140 साल बाद जब समाज विकसित होकर नई-नई तकनीक खोज लेगा और मंगल ग्रह पर जीवन की तलाश करेगा तब यही लाउडस्पीकर बेगुनाहों की मौत की वजह बनेगा। बीबीसी के पत्रकार सुहेल हलीम लिखते हैं कि सालों पहले मेरे एक बुजुर्ग कहा करते थे कि, मैंने भारतीय मुसलमान को कभी कोई यूनिवर्सिटी, स्कूल या कॉलेज माँगते हुए नहीं देखा, न ही कभी वह अपने इलाके में अस्पताल के लिए आंदोलन चलाते हैं और न ही बिजली पानी के लिए, उन्हें चाहिए तो बस एक चीज! लाउडस्पीकर और मस्जिद से अजान देने की इजाजत।

- सम्पादकीय

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

जोखिम भरा है हलाला

बात किसी धर्म-मजहब या सम्प्रदाय की नहीं है। बात है इंसानी संवेदनाओं की जो हमें एक दूसरे से जोड़कर एक परिवार, समाज, देश और दुनिया बनाती है। तीन तलाक और हलाला के खिलाफ भारत में नहीं पूरे विश्व में मुस्लिम महिलाएं मुखर हो चली हैं। हाल ही में एक मुस्लिम महिला ने अपना वीडियो अपलोड कर तलाक और हलाला के खिलाफ जमकर मोर्चा खोला। जिसमें तलाक से दुखी उस महिला ने मुस्लिम महिलाओं को हिन्दूधर्म अपनाने तक की भी प्रेरणा दे डाली। दरअसल मौखिक तलाक और उसके बाद हलाला अब सिर्फ धर्म विशेष के धार्मिक कानून की आड़ में शारारिक शोषण और व्यापार का हिस्सा बनता जा रहा है। बीबीसी की एक पड़ताल में पता चला है कि तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं को इस्लामिक विवाह 'हलाला' का हिस्सा बनाने के लिए कई ऑनलाइन सेवाएं उनसे हजारों पाउण्ड की कीमत वसूल रही हैं। इन मुस्लिम महिलाओं को हलाला का हिस्सा बनने के लिए पहले पैसे देकर एक अजनबी से शादी करनी होती है, उसके साथ शारारिक संबध बनाने होते हैं, फिर उस अजनबी को इन महिलाओं को तलाक देना होता है ताकि वे अपने पहले पति के पास लौट सकें।

फराह जब 20 साल की थी तब परिवारिक दोस्त के माध्यम से उनकी शादी हुई। दोनों के बच्चे भी हुए, लेकिन फराह का कहना है कि आगे चलकर उनकी प्रताड़ना शुरू हो गई। फराह बताती है, ''मैं घर में अपने बच्चों के साथ थी और वे काम पर थे। एक गर्मागर्म बहस के दौरान उन्होंने मुझे एक टैक्स्ट मैसेज भेजा- तलाक, तलाक, तलाक। ''यह तीन तलाक है जिसमें पति अपनी पत्नी को तीन बार तलाक कहता है।'' मुस्लिमों के बीच यह प्रचलन में है और ऐसा कहने से इस्लामिक विवाह खत्म हो जाता है। फराह का कहना है कि वह बुरी तरह से घबरा गई थी लेकिन वह अपने पूर्व पति के पास लौटना चाहती थी। लेकिन हलाला एकमात्र उपाय है जिसके सहारे तलाक शुदा जिंदगी खत्म हो सकती है और विवाह को फिर से बहाल किया जा सकता है। लेकिन कई मामलों में जो महिलाएं हलाला चाहती हैं, उनके लिए यह जोखिम भरा रहता है। मुस्लिमों के एक बड़े वर्ग का मानना है कि आर्थिक रूप से इनका दोहन किया जाता है, ब्लैकमेल किया जाता है और यहां तक कि यौन प्रताड़ना का भी सामना करना पड़ता है।

फराह हताशा के कारण अपने पति से जुड़ना चाहती थी। फराह ने हलाला को अंजाम देने वाले लोगों की तलाश शुरू की। जिसमें कई लोग तो ऑनलाइन इस हलाला के जिस्मानी और आर्थिक कारोबार से जुड़े हैं जो एक रात के दो से ढाई लाख रुपये वसूलते हैं। फराह बताती है ''मैं जानती थी कि जो लड़कियां परिवार से पीछे छूट गई थीं, उन्होंने वापसी के लिए ऐसा किया। वे मस्जिद गई। वहां पर एक खास कमरा होता है जिसे बंद कर दिया जाता है। यहां इमाम या कोई और इसे अंजाम देता है। वह महिला के साथ सोता है और वह अन्य लोगों को भी उस महिला के साथ सोने की इजाजत देता है।'' फराह ने आखिर में तय किया कि वह अपने पूर्व पति के साथ नहीं जाएगी और न ही हलाला का रास्ता अपनाएगी। वह कहती है, ''आप एक तलाकशुदा औरत की हालत नहीं समझ सकते। उस दर्द को एकाकीपन को नहीं समझ सकते। कुछ औरतें जैसा महसूस करती हैं आपको अंदाजा भी नहीं होता होगा।''

यह सिर्फ एक मुस्लिम महिला की कहानी नहीं है। अमूमन हर जगह किसी न किसी के साथ यह घटना घट रही है। विवाह जैसी पवित्र रस्म की मौखिक रूप से तीन बार तलाक कहकर धज्जियां उड़ा दी जातीं और एक महिला को उसके हालात पर छोड़ दिया जाता यदि किसी कारण उसे अपनाना भी चाहें तो एक इस्लामिक कानून के तहत उसे हलाला जैसे अमानवीय कुप्रथा से गुजरना पड़ता है। आज इस्लामिक सुधार को लेकर दुनिया भर में के मुस्लिम विद्वान इस्लाम के जानकर इसमें सुधार करने की बात को दबे स्वर ही सही लेकिन आवाज जरूर उठा रहे हैं। लेखक, विचारक तुफैल अहमद लिखते हैं कि इस्लामी सुधार के बारे में एक महत्त्वपूर्ण सवाल यह है कि- क्या मुसलमान युवा पीढ़ी अपने माता-पिता और इस्लामी मौलवियों से विरासत में मिले

- शेष पृष्ठ 7 पर

.....लेखक, विचारक तुफैल अहमद लिखते हैं कि इस्लामी सुधार के बारे में एक महत्वपूर्ण सवाल ये है कि- क्या मुसलमान युवा पीढ़ी अपने माता-पिता और इस्लामी मौलवियों से विरासत में मिले विचारों का त्याग कर सकती है? सौभाग्य से, इतिहास से हमें आशावादी सबक मिलते हैं- युवा पीढ़ी ने इटली और जर्मनी में नाजीवाद और फासीवाद को लेकर अपने माता-पिता की मान्यताओं को त्याग दिया था। भारत में भी, हिन्दू युवाओं ने जाति और सती प्रथा का त्याग किया। ईसाई धर्म और यहूदीवाद ने आंतरिक संघर्ष झेले, बाईबल और टोरा आम लोगों की जिंदगी से हट गया। चूंकि मध्य पूर्वी धर्मों में इस्लाम सबसे कम उम्र का है, तो उम्मीद की जा सकती है। कि तीन तलाक आदि कुप्रथाओं पर सही फैसला हो। कुरान की भूमिका मस्जिदों तक सीमित होनी चाहिए। न कि उसका हस्तक्षेप सामान्य जीवन में।.....

बोध कथा

ब्रह्मज्ञान क्या है?

एक दिन भगवान् कृष्ण के पास नारद जी आये. बोले- ''भगवन्! मैं ब्रह्मज्ञान की बात पूछने आया हूँ। क्या है वह ब्रह्मज्ञान? क्यों हम ब्रह्म का दर्शन नहीं कर पाते।''

श्री कृष्ण जी ने कहा-''अभी आये हो। थोड़ी देर बैठो, प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा।''

नारद जी बैठे, विश्राम किया; बोले-''अब दो मेरे प्रश्न का उत्तर।''

श्री कृष्ण ने कहा-''आओ, जंगल में घूमने चलें, वहाँ बातें करेंगे।'' दोनों निकल पड़े सैर को। घूमते-घूमते नारद जी काफ़ी थक गये। प्यास भी सताने लगी। श्रीकृष्ण ने मुस्कराते हुए कहा- "नारद जी! आपको शायद प्यास लगी है, मुझे भी लगी हूँ। आप कहीं से देखकर थोड़ा पानी ले आइए।" नारद जी बोले आप बैठिए, मैं अभी पानी लेकर आता हूं। वे आगे गये तो उन्हें एक कुआँ मिला, जिसपर कुछ स्त्रियाँ पानी भर रही थीं। नारद जी ने पानी माँगा। एक युवती ने अपने घड़े से पानी पिला दिया। नारदजी पानी पी रहे थे और उसकी ओर देख रहे थे। देखते-देखते मन में मोह जाग उठा। पानी पी लिया तो एक ओर खड़े हो गये। वह लड़की घड़े को लेकर अपने घर को चली तो नारद जी भी उसके पीछे-पीछे चल पड़े। उसके घर पहुँचे तो लड़की के पिता ने उन्हें पहचानकर कहा-''आइये नारद जी! मेरे सौभाग्य कि आपके दर्शन हुए। अब भोजन किये बिना जाने न दूँगा।''

नारद जी भी यही चाहते थे; बोले-''भूख तो लगी है।'' भोजन कर चुके तो बोले- ''हम कुछ दिन तुम्हारे घर में रहें तो क्या हो?'' लड़की के पिता ने कहा-''यह तो मेरा सौभाग्य है।''

नारद जी वहीं टिक गये। उस लड़की के रूप का मोह उन्हें पागल किये देता था। मन में जो गिरावट आ गई थी, वह और भी नीचे लिये जाती थी। एक दिन लड़की के पिता से बोले-''मैं चाहता हूँ कि इस कन्या का विवाह मेरे साथ हो जाय।'' लड़की के पिता ने कहा-'' महाराज! कन्या तो पराया धन है। मुझे उसका विवाह तो करना ही है। आपसे अच्छा वर उसे कहाँ मिलेगा? मैं विवाह कर दूँगा अवश्य, परन्तु मेरी एक शर्त भी माननी होगी और शर्त यह है कि विवाह के पश्चात् आप मेरे ही घर पर रहें, कहीं जायें नहीं।''

नादरजी को और क्या चाहिए था! रमते राम का कोई घर-घाट था नहीं। चिन्ता कर रहे थे कि पत्नी को लेकर कहाँ जायेंगे? बना-बनाया घर मिल गया। शर्त स्वीकार हो गई। विवाह भी हो गया। नारद जी अपने-आपको भूलकर ससुरालवालों के पशु चराते, उनके खेतों में काम करते। उन्हीं के घर में रहने लगे। इस प्रकार कितने ही वर्ष व्यतीत हो गये। गृहस्थी नारद के दो-तीन बच्चे भी हो गये। तभी एक दिन मूसलाधार वर्षा होने लगी। एक दिन, दो दिन, कई दिन होती रही। सब ओर जल-थल एक हो गया। शेष लोग कहाँ-कहाँ गये, यह नारद जी ने नहीं देखा। वह तो अपनी पत्नी और बच्चों को लेकर मकान की दूसरी मंज़िल में चले गये। वहाँ भी पानी पहुँचा तो छत पर चले गये। परन्तु बाढ़ तो रुकी नहीं। पानी जब छत के निकट पहुँचा तो नारद जी ने समझा कि मकान अब बचेगा नहीं। पत्नी और बच्चों सहित पानी में कूद पड़े कि किसी ऊँचे स्थान पर जाकर प्राण बचायें। परन्तु ऐसा करते ही दो बच्चे डूब गए। पत्नी रोने लगी तो नारद बोले-''भागवान, रोती क्यों है? तू भी है, मैं भी हूँ, बच्चे और हो जायेंगे।'' परन्तु तभी तीसरा बच्चा भी डूब गया। उसे ढूँढने के लिए नारद जी हाथ-पाँव मार ही रहे थे कि पानी का एक और रेला आया, पत्नी भी डूब गई। बड़ी कठिनता से नारद जी एक ऊँचे स्थान पर पहुँचे। वहाँ भी पानी था। थक बहुत गये थे। तैरने का अब प्रश्न उत्पन्न नहीं होता था, परन्तु धन्यवाद किया कि खड़े हो सकते हैं। पानी छाती तक था। तभी पानी ऊपर बढ़ा, कन्धों तक पहुँच गया, फिर ठोडी भी डूब गई। पानी होठों के पास पहुँचा तो नारद जी चिल्ला उठे-''हे भगवन्, मुझे बचाओ!''

तभी याद आया कि वे तो भगवान् कृष्ण के लिए पानी लेने आये थे। रोकर बोले-''क्षमा करो भगवन्!''

और तब कहानी है कि आँख खुल गई। नारद जी ने देखा कि कहीं कुछ भी नहीं है। वे जंगल में पड़े हैं। सामने खड़े श्री कृष्ण मुस्करा रहे हैं। मुस्कराते हुए उन्होंने कहा-''नारद जी! आपके प्रश्न का उत्तर मिल गया है या नहीं?''

प्रकृति की वास्तविकता को समझकर इससे छुटकारा पा लेना ही ब्रह्मज्ञान है। इससे मुक्ति पाये बिना ब्रह्मदर्शन नहीं होता। परन्तु यह प्रकृति माया इतनी लुभाने वाली है कि इसके जाल में फँसा व्यक्ति तभी समझता है, जब नाक तक पानी आ जाता है।

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

यज्ञ : एक परोपकार

यज्ञ केवल अग्नि में घी, सामग्री, समिधा (लकड़ी) मंत्रों सहित डालने का नाम ही नहीं है। यह तो केवल प्रक्रिया मात्र है, बल्कि यज्ञ वे सभी कार्य हैं जो परोपकार व जनहित की दृष्टि से किये जाते हैं (वे सभी यज्ञीय कार्य हैं) जैसे यज्ञ के करने वाले का घर तो सुगन्धित व पवित्र होता ही हे, साथ ही यज्ञ करने वाले का पड़ोसी चाहे वह उसका शत्रु ही क्यों न हो उसको भी लाभ पहुंचता है। इसीलिए वेदों में ''यज्ञों वै श्रेष्टतम् कर्म'' कहकर यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म बताया है। वेद के एक दूसरे मंत्र में कहा गया है कि ''स्वर्ग कामोयजेत'' यानी स्वर्ग की कामना रखने वाले को यज्ञ करना चाहिए। अर्थात् यज्ञ करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है जो मानव का परम लक्ष्य है।

यज्ञ शब्द यज्धातु से बना है जिसका अर्थ है देव पूजा, दान व संगतिकरण। यह तीनों चीजें एक यज्ञीय परिवार पर लागू होती हैं। परिवार में तीन किस्म के सदस्य होते हैं 1. छोटे बच्चे 2. माता-पिता, बृद्धजन तथा बाहर से आये विद्वानजन 3. युवा भाई-बहन। देव पूजा के दो अर्थ हैं। पहला अर्थ परिवार सम्बन्धी है यानी छोटे बच्चे यज्ञ करने के पश्चात् खड़े होकर अपने माता-पिता, वृद्धजन व बाहर से आये विद्वानों को नतमस्तक होकर श्रद्धा पूर्वक पैर छूकर नमस्ते करके उनका आदर-सत्कार करना। पूजा का अर्थ किसी का आदर-सत्कार करना या किसी का सद् उपयोग करना होता है, केवल देश को ही नहीं सम्पूर्ण मानव जाति को हानि उठानी पड़ी है। यही गलत पूजा अन्ध विश्वास व पाखण्ड को बढ़ाने में बड़ी सहायक सिद्ध हुई है। दूसरा अर्थ है पांच जड़ (अचेतन) देवता, वे हैं अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी ओर आकाश। इन पांचों जड़ देवताओं का मुख अग्नि है। जिस प्रकार मुख से खाया हुआ अन्न पेट में जाकर उसका रस व खून बनता है और फिर वह नस-नाड़ियों द्वारा पूरे शरीर में पहुंच कर शरीर को स्वस्थ बनाता है, उसी प्रकार हवन में डाला हुआ घी, सामग्री व समिधा उनकी सुगन्धि हजार गुणा बढ़कर पूरे वायु मण्डल यानी जल, पृथ्वी, हवा व आकाश में फैल जाती है और उनको शुद्ध व पवित्र कर देती है जिससे पूरा वायु मण्डल शुद्ध व पवित्र हो जाता है और प्रत्येक जीव के लिए स्वास्थ्य वर्धक बन जाता है। इसीलिए हमारे ऋषि-मुनियों ने नित्य हवन (यज्ञ) करने का विधान बनाया है। यज्ञ करने का दूसरा कारण यह भी है कि प्रत्येक मनुष्य अपने मल-मूत्र, पसीना तथा अन्य तरीकों से वायु मण्डल के कुछ भाग को गन्दा व अशुद्ध करता है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्त्तव्य बन जाता है कि वह अशुद्ध वायुमण्डल को यज्ञ द्वारा शुद्ध करें ताकि पूरा वायुमण्डल शुद्ध बना रहे।

परिवार में दूसरे किस्म के सदस्य हैं माता-पिता व वृद्धजन, जिनके लिए दान शब्द का प्रयोग हुआ है। इसका तात्पर्य यह है कि छोटे बच्चे जब हवन के बाद अपने माता-पिता तथा वृद्ध जनों का पैर छूकर सादर नमस्ते करके उनका आदर सत्कार करते हैं, तब उनका भी कर्त्तव्य हो जाता है कि वे बच्चों को आशीर्वाद देवें तथा अपने अनुभवों का ज्ञान देवें। इनको दान की संज्ञा दी है। दान वह होता है जो नि:स्वार्थभाव से बिना कुछ लेने की आशा से दिया जाता है। इसलिए वृद्धजनों का आशीर्वाद को दान की संज्ञा दी है। इसका एक दूसरा भी रूप है कि किसी जरूरतमंद को दान देना। यज्ञ एक परोपकारी कार्य है इसलिए वृद्धों को यज्ञ से दान देने की वृत्ति का भी विकास करना चाहिए।

यज्ञ का तीसरा अर्थ है संगतिकरण। संगतिकरण ये भी दो अर्थ हैं। पहला अर्थ है कि परस्पर भाई-बहन एक दूसरे से प्यार करें, साथ ही बड़ों का आदर-सत्कार व छोटों से स्नेह व प्यार करें ताकि परिवार का वातावरण भेद-भाव, वैमनस्य रहित व प्यार भरा बना रहे तथा परिवार में सुख व शान्ति बनी रहे। इसका दूसरा अर्थ यह है कि यज्ञ में हर चीज का संगतिकरण बना रहे, यानी सामग्री में जड़ी-बूटियों की मात्रा उचित हो, घी व सामग्री सही मात्रा में जैसा विधान हे वैसे ही डाली जावे तथा उठने-बैठने में भी संगतिकरण हो ताकि यज्ञ सुचारु रूप से चलता रहे और सभी हवन का पूरा लाभ उठा सकें।

यहां यह बात भी बतलाना अति आवश्यक है कि यज्ञ को वेदों में ''अयं यज्ञो विश्वस्थभुवनस्य नाभि:'' यानी यज्ञ को सम्पूर्ण विश्व की नाभि (केन्द्र) बताया गया है। जैसे पूरा शरीर नाभि से नियन्त्रित होता हे, वैसे ही पूरा विश्व, यज्ञ से नियन्त्रित रहता है। इसीलिए यज्ञ की बड़ी महिमा है। यज्ञ हर व्यक्ति को नित्य करना चाहिए। यदि प्रत्येक व्यक्ति यज्ञ न कर सके तो कम से कम हर परिवार को तो नित्य हवन करना ही चाहिए ताकि परिवार का वातावरण शुद्ध व पवित्र बना रहे तथा परस्पर के व्यवहार में प्रेम बना रहे।

- खुशहाल चन्द्र आर्य
कोलकाता

.....पूजा का अर्थ किसी का आदर-सत्कार करना या किसी का सद्उपयोग करना होता है, केवल देश को ही नहीं सम्पूर्ण मानव जाति को हानि उठानी पड़ी है। यही गलत पूजा अन्ध विश्वास व पाखण्ड को बढ़ाने में बड़ी सहायक सिद्ध हुई है। दूसरा अर्थ है पांच जड़ (अचेतन) देवता, वे हैं अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी ओर आकाश। इन पांचों जड़ देवताओं का मुख अग्नि है। जिस प्रकार मुख से खाया हुआ अन्न पेट में जाकर उसका रस व खून बनता है और फिर वह नस-नाड़ियों द्वारा पूरे शरीर में पहुंच कर शरीर को स्वस्थ्य बनाता है, उसी प्रकार हवन में डाला हुआ घी, सामग्री व समिधा उनकी सुगन्धि हजार गुणा बढ़कर पूरे वायु मण्डल यानी जल, पृथ्वी, हवा व आकाश में फैल जाती है और उनको शुद्ध व पवित्र कर देती है जिससे पूरा वायु मण्डल शुद्ध व पवित्र हो जाता है।.....

संस्मरण

जब मैंने राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र बाबू की कुर्सी में कंधा लगाया

श्री मामचन्द रिवाड़िया जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के सहयोगी सदस्य रहे हैं। इस वर्ष आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में श्री रिवाड़िया जी का आयसमाज की ओर से सार्वजनिक अभिनन्दन भी किया गया। *- विनय आर्य, महामन्त्री*

मैं अजमेरी गेट से राजघाट जा रहा था। मेरा एक साथी पूछने लगा- 'भई कहां जा रहे हो।'

'राजघाट जा रहा हूँ।''वहां क्या है?'

'शुक्रवार शाम की प्रार्थना। उसमें शामिल होने में मुझे बड़ा आनन्द आता है।' मैंने कहा।

'सब्जी बेचने वाले के बालक हो। क्या तुम्हें इतने बड़े-बड़े आदमियों में बैठते हुए संकोच नहीं होता।' मेरा साथी कहने लगा। 'संकोच की क्या बात है। आज के समाजवादी युग में कौन बड़ा और कौन छोटा है, भाई। सब समान हैं। देश के कानून और संविधान में बड़े-छोटे का भेदभाव दूर कर दिया है।' मैंने बड़ा नम्र होकर, मगर आत्मविश्वास से कहा।

'मालूम होता है, कुछ पढ़-लिख गये हो। सपनों की दुनिया में विचरते हो। कहां तुम सब्जी बेचने वाले के लड़के और कहां राजघाट की प्रार्थना सभा।' मेरा साथी कहने लगा।

भाई मैं तो गांधी साहित्य बड़ी श्रद्धा-भक्ति से पढ़ता रहा हूं और पढ़ता रहूंगा। भला, उनसे बढ़कर हमारा सखा कौन हो सकता है। उन्हीं के कारण मुझ में यह साहस पैदा हुआ है कि मैं बड़े आदमियों में उठ-बैठ सकता हूं। मैंने अपने साथी को बताया।

मेरी बातें सुनकर मेरा यह साथी मेरे साथ हो लिया। हम राजघाट पहुंच गये। शाम के 5 बजे होंगे। रामधुन शुरू हुई। कुरान शरीफ, गीता उपनिषद् आदि का पाठ हुआ। इतने में प्रार्थना सभा में मुझे कुछ हलचल होती दिखाई दी।

मैं अपने समीप बैठे एक सज्जन पुरुष से पूछ ही बैठा- यह क्या खुसर-पुसर हो रही है। क्या मामला है?

राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी प्रार्थना सभा में भाग लेने के लिए पधार रहे हैं। सज्जन पुरुष ने मुझे बताया। यह सुनकर मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ। मन ही मन मैं सोचने लगा कि अब तो मुझे देशरत्न का सानिध्य प्राप्त करने का सौभाग्य मिलेगा। कोई फोटोग्राफर फोटो खींचता होगा तो उससे निवेदन करूंगा कि जरा अपने कैमरे का फोकस इधर भी कर लेना। राष्ट्रपति जी पधारे। आंखें बंद कर समाधिस्थ हो गये। मैं भी चुपचाप सरकते-सरकते आगे आ पहुंचा। सामने राष्ट्रपति जी बैठे थे और उनके पास की पंक्ति में मैं सबसे आगे बैठा था। मैंने अपने जीवन को धन्य समझा। मैं सब्जी बेचने वाले का लड़का हूं तो क्या हो गया। गांधीजी की कृपा से मुझे देश के सर्वोच्च नेता के सामने बैठने का सुअवसर मिल गया।

प्रार्थना समाप्त हुई। राष्ट्रपति जी उठकर चल दिये। मैं भी उनके पीछे हो लिया। उनकी कार दक्षिणी द्वार के बाहर खड़ी थी। अंगरक्षकों के पहरे में राष्ट्रपति द्वार की ओर बढ़े। वे एक पहियेदार कुर्सी पर बैठकर जा रहे थे। मैं भी कुसी के आसपास चला जा रहा था।

एक अंगरक्षक- क्यों भाई कहां जाते हो? कहीं नहीं भाई। दर्शनों का प्यासा हूं। राष्ट्रपति जी के दर्शन करके अपना सौभाग्य मान रहा हूं। अत: कृपा करके मुझे जरा साथ-साथ चलने दो। मैंने बड़ी ही दीन भावना से कहा।

एक अंगरक्षक - पर न जाने क्या जादू हो गया। बोला-अच्छा। गड़बड़ न करना चलते आओ। मैं चलता ही रहा। फाटक से पहले ही सीढ़ियां आ गई। राष्ट्रपति जी उतरने को हुए।

श्रीमान् बैठे रहिये। अंगरक्षक ने

राष्ट्रपति जी से निवेदन किया। दो अंगरक्षक आगे बढ़े। उन्होंने पहियेदार कुर्सी को अपने कन्धों पर उठाया। मुझसे रहा नहीं गया। मैं भी आगे बढ़ा और अंगरक्षकों के साथ मैंने भी कुर्सी को कन्धा लगाया। कुर्सी फाटक से बाहर बिजलीघर जाने वाली सड़क पर रख दी गयी। राष्ट्रपति जी कुर्सी से उतरे। मैंने हाथ जोड़कर उनका अभिवादन किया। जिसका उत्तर उन्होंने भी हाथ जोड़कर दिया। इसके बाद वे कार में बैठकर राष्ट्रपति भवन चले गये।

यह घटना 11 मई 1962 की है, जब श्रद्धेय राष्ट्रपति जी राष्ट्रपति पद से संन्यास लेकर सदाकत आश्रम जाने वाले थे। दुलर्भ मिलन के ये क्षण मेरे हृदय पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ गये हैं।

-मामचन्द रिवाडिया
संस्थापक महामंत्री, आर्य समाज
टैगोर गार्डन, नई दिल्ली-110027

पूर्वोत्तर भारत में आर्यसमाज के बढ़ते कदम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा

आसाम के आदिवासी क्षेत्र में एक और नए विद्यालय एवं छात्रावास का शिलान्यास

दीमापुर विद्यालय के निर्माण का शुभारम्भ श्री दीनदयाल गुप्त

दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित झापरा जान जिला कार्बी आंगलांग आसाम में एक नए विद्यालय का निर्माण कार्य आरम्भ किया। दिल्ली से पधारे प्रमुख सहयोगी श्री रामकृष्ण तनेजा, श्रीमती कृष्णा तनेजा, पूर्वोत्तर के प्रधान श्री दीनदयाल गुप्त, पानीपत से श्री अजय गोयल, श्री विनय आर्य एवं उत्तर पूर्व राज्य के नागालैंड के प्रभारी आचार्य संतोष, रामाशंकर जी की उपस्थित में यह कार्य सम्पन्न हुआ। आसाम एवं नागालैंड में यह आर्य समाज के कार्यों के प्रचार प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यहां पर यज्ञ शाला का निर्माण कराने के लिए अंजलि कपूर एवं डॉ. मुकुल कपूर जी का बहुत-बहुत धन्यवाद। इस अवसर पर झापराजान में एक लघु विद्यालय के निर्माण कार्य, दीमापुर के विद्यालय के निर्माण कार्य का शुभारम्भ तथा बोकाजान में बालक-बालिका छात्रावास का नवीनीकरण एवं एक नए विद्यालय के निर्माण की भूमिका बनाई गई।

- जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री, अ.भा. दयानन्द सेवाश्रम संघ

धनश्री में संचालित महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्ष विद्या निकेतन में रहने एवं पढ़ने वाले बालक- एवं बालिकाएं

प्रथम पृष्ठ का शेष

उठा देती है। कोई विद्यार्थी दिन के अशान्त चिल्ला-पुकार के वातावरण के स्थान पर शान्ति से देर रात को पढ़ाई करके सोता है, किन्तु अजान से उसे बीच में उठना पड़ता है, नींद पूरी नहीं होती है। इसका स्वास्थ्य व मस्तिष्क पर गलत प्रभाव होता है, यह सब क्या है ?

पहले बिना माईक के भी अजान होती थी। सुबह की अजान एक साथ व कुछ समय के लिए होती थी। अब एक शहर में जहाँ कई मस्जिदें हैं अब वहाँ से लम्बे समय तक और अलग अलग समय में होती हैं। यह क्यों है? यह जानबूझकर अपनी साम्प्रदायिक विचारधारा का प्रभाव बढ़ाने की योजना है। क्या इस प्रकार की शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना धर्म है ?

जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और वैसे ही ध्वनि प्रदूषण स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, सामाजिक अव्यवस्था है, शासकीय नियम उपनियमों की सरेआम उपेक्षा है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने भी इस प्रकार के प्रदूषण को अनुचित बताया है। इस प्रकार इन समस्त बातों को ध्यान में रखकर इस प्रवृत्ति पर चिन्तन करना चाहिए।

बुराई किसी धर्म, सम्प्रदाय तक सीमित नहीं, बुराई तो बुराई है। यहां एक बात और इसी सन्दर्भ में जोड़ना चाहता हूं यह केवल अजान तक ही ध्वनि प्रदूषण नहीं है, देर रात तक अन्य धार्मिक कार्यक्रमों में, विवाह आदि के अवसर पर बड़े बड़े डी. जे., तेज आवाज में स्पीकर बजाना भी अनुचित है। इस पर भी नियन्त्रण होना चाहिए, डी. जे. की भारी भरकम आवाज हृदय रोग से पीड़ित व्यक्तियों को या किसी भी बीमारी से जूझ रहे व्यक्ति के लिए बहुत कष्टदायक होता है। ऐसे भजन, गीत, सूचनाएं मनोरंजन के स्थान पर कष्ट पहुंचाते हैं और पीड़ित व्यक्ति उनको कोसते हैं।

अजान का विरोध नहीं है, किन्तु अपनी विचारधारा के लिए दूसरों को प्रताड़ित नहीं करना चाहिए। कम से कम सुबह की अजान का समय व ध्वनि पर नियन्त्रण करना नितान्त आवश्यक है। इस प्रकार एक ही देश में सिक्के के दोनों पहलू पर अपनी ही जीत वाली स्थिति ठीक नहीं है। एक ओर दूसरी विचारधारा को तो हम नहीं मानेगें किन्तु हमारी विचारधारा को हम जबरन दूसरों पर थोपें। यह कितना अव्यावहारिक व तथ्यहीन व्यवहार है। गाय को हिन्दू समाज पूज्य मानता है किन्तु अन्य मजहबी विचारधाराएं हिन्दुओं की इस पवित्र भावना की सरासर उपेक्षा कर रही हैं। क्या एक राष्ट्र में ऐसा व्यवहार उचित है? अजान कितनी भी जोर से देवें या धीमी आवाज में करें क्या अन्तर पड़ता है? किन्तु अपनी हठधर्मी, दिखावे से उसे महत्त्व देना एक साम्प्रदायिकता का प्रतीक है। एक अच्छे व्यक्ति, अच्छे समाज और अच्छे राष्ट्र की कल्पना का आधार धर्म है, साम्प्रदायिकता नहीं।

- इन्दौर रोड, महू (म.प्र.)

आर्य समाज विवेक विहार का 46वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज विवेक विहार का 46वां वार्षिकोत्सव 10 से 16 अप्रैल 2017 के बीच सम्पन्न हुआ। जिसमे बच्चों, युवा, बुजुर्ग आदि सभी वर्ग के सदस्यों ने भाग लिया। वार्षिकोत्सव का आरम्भ प्रभात फेरी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, वैदिक चिंतन की उपादेयता, घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ, योग स्वास्थ्य एवं प्राकृतिक चिकित्सा, भजन संध्या एवं कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। पूर्णाहूति व समापन समारोह मे महाशय धर्मपाल जी (चेयरमैन एम डी एच) व श्री विनय आर्य, महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने कार्यकर्ताओं व बच्चों को पुरस्कृत किया। समारोह में विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारियों तथा विद्वानों ने अपने अपने वक्तव्यों से सभी का मार्गदर्शन किया।

आधुनिक मशीनों से सुसज्जित व्यायामशाला का उद्घाटन

दिनांक 20 अप्रैल 2017 को आर्य समाज शाहबाद मोहम्मदपुर की आधुनिक मशीनों से सुसज्जित व्यायामशाला का उद्घाटन श्री धर्मपाल आर्य प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्षसाहित्य प्रचार ट्रस्ट के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर प.दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री रविदेव व श्री वीरेन्द्र सरदाना सहित सभा के अन्य अधिकारियों ने पहुंचकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। आर्य समाज द्वारा गांव के वृद्ध कार्यकत्ताओं तथा श्री जिल्ले सिंह, चन्द्रभान, रिजकराम (पूर्व प्रधान) डॉ. जगराम, श्रीमती किरण देवी व श्रीमती शांति देवी का सम्मान श्री धर्मपाल जी द्वारा किया गया।

-मुकेश कुमार आर्य, मंत्री

Glimpses of the YajurVeda

- Dr. Priyavrata Das

Continue from last issue :-

Intelligence, Activity and Emotion

"May my mind that in which the Divine utterancs pertaining to knowledge, action and devotion are held firm like spokes in the nave of a chariot wheel, in which all thoughts of living beings lie interwoven, resolve on what is good."

Born of matter, mind functions as if it is a conscious entity. Initiation comes from the self, and mind works under its instruction. Intelligence, activity and emotion are the three facts of mind. The self learns, does and feels through it and approaches God through three types of process, i.e. intellectual, action-oriented and emotional. Mind is a great complex organ through which we are enabled to know, to do and to feel. These three are mentioned as Rk, Yajuh and Saman.

Mind is after all an organ. It plays under the shadow of the self so much so, that it usurps the claims of the self as the player. The resolution has to come in the self, and the perceptible shift is in the mind. In the common parlance, then, we say, that it is the mind that resolves on what is good or evil. O Lord, by Your guidance alone, we shall acquire strength that allows the mind to resolve on what is good.

यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठता रथनाभाविवाराः।

यस्मिँश्चित्तँ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसकल्पमस्तु।।(Yv. xxxiv.5)

Yasminnrcah sama yajumsi yasmin pratisthita rathana bhavivarah.yasminscittam sarvamotam prajanam tanme manah sivasankalpamastu..

Dynamic Peace

The pursuit of Vedic wisdom is for the attainment of personal and social peace. Ine who has not enjoyed fearlessness surrenders to falsehood. The peace, therefore, invoked in the Vedic hymns is not static peace. Faintheartedness and cowardice dominated people never enjoy real peace. A true devotee craves for dynamic peace while keeping himself ever busy with beneficial activities.

Chapter xxxvi, verse 17 of Yajurveda is a unique passage depicting the world of peace established in creation which a peace loving man needs to emulate:

"The sky is peaceful, the midspace is peaceful; the earth is peaceful; the waters are peaceful; the small plants and forest trees are peaceful; the bounties of Nature are peaceful; all are peaceful; the peace itself is peaceful-may such a peace come to me, I pray".

The celestial sphere with numerous massive bodies revolving, ever remains peaceful. All that is activated and energetic in this vast creation maintains peace. Unfortunately, man who has been endowed with intellect misuses it and pollutes his surroundings and creates turmoil instead of peace.

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्बह्म शान्तिः सर्वँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

(Yv.xxxvi.17)

Dyauh santirantariksam santih prthivi santirapah santirosadhayah santih.

vanaspatayah santirvisve devah santirbrahma santih sarvam santih santireva santih sa ma santiredhi..

Introducing Cultivation of Land

The Vedic verses inspired the earliest human society for preparing land for crops. Two verses in this connection are presented here:

"Bind the traces of ploughs; put yokes on the bullocks having made the furrow, sow the seeds in it. With the sweat of the cultivators, may the stalks be crowned with welldeveloped grains and may the ripened harvest come close to our sickle."

"May the furrow be irrigated with sweet water by the grace of all the bounties of Nature and the health-promoting winds. O vigour-bestowing furrow, being filled with moisture, may you provide us with plenty of juicy food.

युनक्त सीरा वि युगा तनुध्वं कृते योनौ वपतेह बीजम्। गिरा च श्रुष्टिः सभरा असन्नो नेदीयऽइत्सृण्यः पक्वमेयात्।।

(Y.v xii.68)

घृतेन सीता मधुना समज्यतां विश्वैर्देवैरनुमता मरुद्भिः।

ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमानास्मान्त्सीते पयसाभ्याववृत्स्व।।(Y.v xii.70)

Yunakta sira vi yuga tanudhvam krte yonau vapateha bijam.

gira ca srustih sabhara asanno nediya it srnyah pakvameyat..

Ghrtena sita madhuna samajyatam visvairdevairanumata marudbhih.

urjasvati payasa pinvamanas ma ntsite payasa bhya vavrtsva..

To be Conti....

Contact No. 09437053732

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ - 22 (स)

गतांक से आगे....

11. पठति = पढ़ता है

सः पठति = वह पढ़ता है।
सा पठति = वह पढ़ती है।
एषः पठति = यह पढ़ता है।
एषा पठति = यह पढ़ती है।
कः पठति ? = कौन पढ़ता है ?
का पठति ? = कौन पढ़ती है ?
विनयः पठति = विनय पढ़ता है।
विनीता पठति = विनीता पढ़ती है।
माता पठति = माँ पढ़ती है।
पिता पठति = पिता पढ़ता है।
छात्रः पठति = छात्र पढ़ता है।
छात्रा पठति =छात्रा पढ़ती है।
अहं पठामि = मैं पढ़ता हूँ / पढ़ती हूँ।

12. कदा = कब

भवान् = आप (पुंलिङ्ग)
भवती = आप (स्त्रीलिङ्ग)
कार्य कदा करिष्यति ?
= आप काम कब करेंगे /करेंगी ?
धनं कदा दास्यति ?
= आप धन कब देंगे/ देंगी ?
दुग्धं कदा पास्यति ?
= आप दूध कब पियेंगे/पियेंगी ?
एषः कदा स्वस्थः भविष्यति ?
= ये कब स्वस्थ होगा ?
एषा कदा स्वस्था भविष्यति ?
= ये कब स्वस्थ होगी ?
यानं कदा आगमिष्यति ?
= वाहन कब आएगा ?

13. युवकः - अहम्

आसम्। = मैं था ।

युवती - अहम्

आसम् = मैं थी।
युवकः - अहं बालकः आसम्।
= मैं बालक था।
युवती - अहं बालिका आसम्।
= मैं बालिका थी।
युवकः - अहं छात्रः आसम्।
= मैं छात्र था।
युवती - अहं छात्रा आसम्।
= मैं छात्रा थी।
युवकः - अहं ध्यानमग्नः आसम्।
= मैं ध्यानमग्न था।
युवती - अहं ध्यानमग्ना आसम्।
= मैं ध्यानमग्न थी।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

प्रेरक प्रसंग

वे क्या से क्या बन गए

ऋषि दयानन्दजी के सदुपदेशों से जिन महानुभावों के जीवन ने पलटा खाया, श्री लाभचन्दजी उनमें से एक थे। उन्होंने कहाँ ऋषि-दर्शन किये यह हमें पता नहीं, परन्तु पण्डित विष्णुदत्तजी एडवोकेट के एक लेख से यह पता लगता है कि उन्होंने ऋषि-दर्शन किये। वे स्यालकोट के रहनेवाले थे। आर्यसमाज के आरम्भिक काल में स्यालकोट में एक और आर्यपुरुष इसी नाम के थे। वे वकील थे। जिन लाभचन्दजी की चर्चा हमने छेड़ी है, ये भी आर्यसमाज के एक प्रमुख गायक और कवि हुए हैं। वे स्वल्प शिक्षित थे। पंजाबी में बहुत अच्छे भजन बनाते थे

उनमें जोश बहुत था। आर्यसमाज की सेवा करने के लिए वे सदैव तत्पर रहते थे। आर्यसमाज में आने से पूर्व वे जुआ खेलते और खिलाते थे। उन दिनों जुआबाजों के ग्रुप मेलों पर जाकर ताश के पत्तों के खेल से भोले-भाले लोगों को लूटते थे। इनकी चतुराई (Tricks) को समझना कठिन होता था।

लाभचन्दजी ने यह धन्धा छोड़कर एक दुकान चला ली, फिर एक वकील के मुंशी बन गये। आर्यसमाज के प्रचार की धुन लगी तो सारे पंजाब में घूम-घूमकर प्रचार करने लगे। जब आर्यसमाज का यह सेवक मेलों पर प्रचारार्थ जाता तो ताश से जुआ खेलनेवाले लाभचन्दजी का बहुत मान-सम्मान करते, उनकी चापलूसी भी करते।

मान-सम्मान इसलिए करते थे कि लाभाचन्दजी उनमें से निकलकर इतने ऊँचे उठ गये। चापलूसी इसलिए करते थे कि लाभचन्द उनकी चालाकियों की पोल न खोल दें। श्री पण्डित विष्णुदत्तजी ने लिखा है कि एक मेले पर उन्होंने अपनी आँखों से देखा कि ताश के पत्तों से लूटनेवाले इतना पुलिस से नहीं डरते थे जितना कि लाभचन्दजी से। वे समझते थे कि पुलिसवालों का मुख तो वे पैसे से बन्द कर लेंगे, परन्तु लाभचन्द तो प्रलोभन में फँसनेवाला नहीं। लाभचन्दजी के कारण वे लोग ग्रामीणों को साहसपूर्वक न लूट पाते थे।

लाभचन्दजी शुभकर्मों की प्रबल प्रेरणा दिया करते थे। इसके लिए वे अपने भजनों में मृत्यु वा वैराग्य का बहुत अच्छा चित्र खींचा करते थे। भरपूर जवानी में ही उनमें ईश्वरभक्ति और वैराग्य का भाव बहुत अधिक था। आपने लम्बी आयु न भोगी।

आर्यसमाज के इतिहास में आपने एक विशेष कार्य किया जिसे आर्यसमाज आज भूल चुका है। यह लाभचन्दजी ही थे जिन्होंने दलितों में, श्रमिकों में आर्यसमाज को लोकप्रिय बनाया। जो आर्यसमाज आरम्भ में पढ़े-लिखे लोगों और दुकानदारों तक सीमित था, उस आर्यसमाज को दलितवर्ग तक पहुँचाया।

स्यालकोट सारे भारत में दलितोद्धार का सबसे बड़ा केन्द्र बना तो लाभचन्दजी के कारण। स्यालकोट का अनुकरण सारे पंजाब और फिर सारे भारत के आर्यसमाजों ने किया। एक स्वल्प शिक्षित ने अपने तपोबल से आर्यसमाज के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय जोड़ा। उनकी अनूठी तड़प पर सब बलिहारी थे!

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आर्य समाज सी-3 पंखा रोड के वार्षिकोत्सव का समापन

आर्यसमाज सी-3 पंखा रोड जनकपुरी नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव का समापन समारोह 30 अप्रैल को प्रात: 7:30 से दोपहर 1 बजे तक मनाया जाएगा। - ***शिव कुमार मदान, प्रधान***

आर्य समाज रमेश नगर आध्यात्मिक शिविर का समापन

आर्यसमाज रमेश नगर में आयोजित दिव्य आध्यात्मिक शिविर का समपन 30 अप्रैल को किया जाएगा। इस अवसर पर स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक जी के प्रवचन होंगे। इससे पूर्व चले कार्यक्रम में विभिन्न स्थानों पर शिविर लगाए गए।

- ***मन्त्री***

आर्य समाज आदर्श नगर में वेद प्रवचन

आर्यसमाज आदर्श नगर दिल्ली मे 15 मई से 21 मई तक आचार्य अखिलेश्वर जी के वेद प्रवचन होंगे। इस अवसर पर श्री देव आर्य जी के मधुर भजन होंगे।

- ***मन्त्री***

आर्य समाज पटियाला का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर, चौक आर्य समाज पटियाला का वार्षिक उत्सव एवं यजुर्वेद पारायण महायज्ञ 4 से 9 अप्रैल तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। यज्ञब्रह्मा स्वामी विदेह योगी जी थे। पं. उपेन्द्र आर्य ने अपने सुमधुर भजनों से समां बांध दिया। -***वेद प्रकाश तुली***

प्रवेश प्रारम्भ

वैदिक कन्या गुरुकुल, दयानन्द नगर, टि. मांदापुर पोस्ट. एस. कोंडापुर, वाया राजपल्ली, मं. चिन्न शंकरंपेट जिला मेदक, तेलंगाणा में सातवीं कक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीण कन्याओं का गुरुकुल में प्रवेश लिया जायेगा। प्रवेश 1 मई से 30 जून तक होंगे। अन्य विवरण के लिए दूरभाष 09440153960 पर सम्पर्क करें।

-ब्र. मुरली, संरक्षक

पृष्ठ 3 का शेष

जोखिम भरा है हलाला.....

विचारों का त्याग कर सकती है? सौभाग्य से, इतिहास से हमें आशावादी सबक मिलते हैं- युवा पीढ़ी ने इटली और जर्मनी में नाजीवाद और फांसीवाद को लेकर अपने माता-पिता की मान्यताओं को त्याग दिया था। भारत में भी, हिन्दू युवाओं ने जाति और सती प्रथा का त्याग किया। ईसाई ध र्म और यहूदीवाद ने आंतरिक संघर्ष झेले, बाईबल और टोरा आम लोगों की जिंदगी से हट गया। चूंकि मध्य पूर्वी धर्मों में इस्लाम सबसे कम उम्र का है तो उम्मीद की जा सकती है कि तीन तलाक आदि कुप्रथाओं पर सही फैसला हो। कुरान की भूमिका मस्जिदों तक सीमित होनी चाहिए। न कि उसका हस्तक्षेप सामान्य जीवन में।

मेरा मकसद किसी एक कौम को निशाना बना कर उसके मजहब का मजाक उड़ाना नहीं है। हम अगर किसी बात को नहीं मानते तो जरूरी नहीं कि सब न मानें, लेकिन यह सोचना जरूरी है कि क्या मुसलमान ये समझते हैं कि भारत में उनको एक आने वाले बेहतर कल के लिए किस किस्म की सोच से छुटकारा पाना जरूरी है? मैं टीवी आदि पर या न्यूज प्रोग्राम की बहस देखता हूँ कि हिंदुस्तानी मुसलमानों का एक धड़ा पर्सनल लॉ बोर्ड को बचाने में लगा हुआ है, पिछले माह ही केरल हाई कोर्ट के एक जज ने यह कहते हुए सवाल उठाया कि अगर एक मुसलमान मर्द चार बीवियां रख सकता है, तो एक मुस्लिम महिला चार पति क्यों नहीं रख सकती? कोझिकोड में महिलाओं के एक सेमिनार में जस्टिस बी. कमाल पाशा ने कहा था मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड में महिलाओं से जुड़े कई मुद्दों को लेकर भेदभाव है। खासकर दहेज, तलाक और उत्तराधिकार के मामले पर भेदभाव होता है और जिन धार्मिक नेताओं ने ये हालात पैदा किए हैं, वे इससे पीछा छुड़ाकर नहीं भाग सकते। चूंकि कुरान और हदीस में बदलाव नहीं हो सकते, तो क्या भारतीय मुस्लिमों के बीच परिवर्तन लाने का कोई और रास्ता है?

-राजीव चौधरी

घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ योजना के अन्तर्गत

पुरोहित आवश्यकता

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना - 'घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ' के विस्तार के लिए सभा को योग्य पुरोहितों की आवश्यकता है, जो स्थान-स्थान पर जाकर दैनिक यज्ञ सम्पन्न कराए तथा उपस्थित महानुभावों को अपने प्रभावी उद्बोधन से यज्ञ कराने के लिए प्रेरित कर सके। सभी संस्कार कराने में निपुण को वरीयता दी जाएगी। गुरुकुलों से इसी वर्ष निकले ब्रह्मचारी भी आवेदन कर सकते हैं। योग्यतानुसार वेतन एवं आवास सुविधा प्रदान की जाएगी। इच्छुक ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी अपना विवरण सादे कागज पर लिखकर aryasabha@ yahoo.com पर ई मेल करें या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर पंजीकृत डाक से भेजें। आवेदन पत्र के लिफाफे पर "घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ योजना हेतु पुरोहित के रूप में आवेदन" अवश्य लिखें। स्कूटर/मोटर साइकिल चलाना जानता हो।- ***विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441***

शोक समाचार

सभा के पूर्व भजनोपदेशक एवं प्रचारक श्री सत्यदेव स्नातक जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत लगातार भजनोपदेशक का कार्यभार सम्भालने वाले श्री सत्यदेव जी स्नातक का लगभग 90 वर्ष की आयु में 14 मार्च, 2017 को उनके मेरठ स्थित आवास देहावसान हो गया। अपने उपदेशों से रूढ़ियों, कुरीतियों पर वार करने वाले मशहूर भजन गायक सत्येदव 'स्नातक' जी को पूर्व उपराष्ट्रपति बीडी जत्ती ने सामाजिक कार्यो में योगदान के लिए पुरस्कृत भी किया था। उनका जन्म उ.प्र. के हापुड़ जिला स्थित गांव नियाजपुर खैया में एक किसान परिवार में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा गांव से लेने के बाद उन्होंने ज्वालापुर के गुरुकुल महाविद्यालय से 'आयुर्वेद भास्कर की डिग्री प्रथम श्रेणी में पास की थी। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन आर्य समाज को समर्पित कर दिया था। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन केंद्र नई दिल्ली ने भी उन्हें मान्यता प्राप्त गायक की श्रेणी में रखा था। वे जब भी दिल्ली आते तब सभा कार्यालय में अवश्य आते थे। उनकी स्मृति में शान्तियज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 19 मार्च को आर्यसमाज थापर नगर मेरठ में सम्पन्न हुई, जिसमें अनेक आर्यजनों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री योगराज रल्ली का निधन

आर्यसमाज आदर्श नगर के संरक्षक एवं पूर्व प्रधान श्री योगराज रल्ली जी का 22 अप्रैल को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से 23 अप्रैल को लोधी रोड शमशान घाट पर किया गया।

उनकी स्मृति में शान्तियज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा इस्कॅन ऑडिटोरियम, ईस्ट आफ कैलाश में 25 अप्रैल को सम्पन्न हुई। जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्रीमती कृष्णा चड्ड़ा जी को पतिशोक

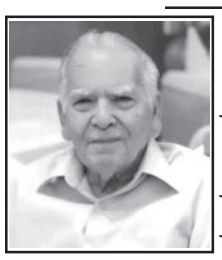

आर्यसमाज टैगोर गार्डन की संरक्षिका, प्रान्तीय आर्य महिला सभा की पूर्व प्रधाना एवं आर्य केन्द्रीय सभा की पूर्व मन्त्री श्रीमती कृष्णा चड्ड़ा जी पूज्य पति श्री योगराज चड्ड़ा जी के दिनांक 18 अप्रैल, 2017 को 91 वर्ष आयु में अकस्मात् निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पंजाबी बाग शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से आचार्य वीरेन्द्र कुमार शास्त्री ने कराया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 21 अप्रैल को आर्यसमाज टैगोर गार्डन में सम्पन्न हुई जिसमें सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य, सतीश चड्ढा, अजय सहगल सहित आस-पास की अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों, विद्वानों एवं संन्यासी महानुभावों ने पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इस अवसर पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा चड्डा जी को से विभिन्न संस्थानों को दानराशि भी भेंट की गई।

श्रीमती लक्ष्मीदेवी आर्या का निधन

सार्वदेशिक आर्य वीर दल म.प्र. व विदर्भ के पूर्व प्रान्तीय संचालक श्री बाबूलाल आर्य जी की धर्मपत्नी एवं महिला आर्यसमाज विदिशा की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती लक्ष्मी देवी आर्या जी का 22 अप्रैल को 88 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार अगले दिन पूर्ण वैदिक रीति से किया।

श्री आनन्द प्रकाश गुप्ता जी को भ्रातशोक

आर्यसमाज पंचदीप के संस्थापक सदस्य एवं आर्यसमाज आदर्श नगर जयपुर के सदस्य, दिल्ली सभा की अन्तरंग सभा के सदस्य श्री आनन्द प्रकाश गुप्ता जी के भ्राता श्री ब्रह्मप्रकाश गुप्ता जी का 14 अप्रैल, 2017 को अकस्मात् निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 21 अप्रैल को अग्रसेन भवन, पीतमपुरा में सम्पन्न हुई जिसमें सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य सहित आस-पास की अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकायिों ने पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे।-सम्पादक

खेद प्रकट : साप्ताहिक आर्य सन्देश दिनांक 10 अप्रैल से 16 अप्रैल, 2017 के अंक में पृष्ठ 7 पर प्रकाशित शोक समाचार के अन्तर्गत प्रकाशित श्री भगवानदास यादव जी को पत्नीशोक में भूलवश भगवानदास यादव प्रकाशित हो गया था। कृपया इसे सुधारकर 'श्री भगवानदास जी को पत्नी शोक' पढ़ा जाए। पाठकों को हुई असुविधा के लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। - ***सम्पादक***

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 24 अप्रैल, 2017 से रविवार 30 अप्रैल, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 27/28 अप्रैल, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 26 अप्रैल, 2017

प्रतिष्ठा में,

जहांगीरपुरी में आर्यसमाज मन्दिर के लिए भूमि क्रय एवं लघु भवन निर्माण हेतु सहयोग की अपील

आपको जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि दिल्ली के जहांगीर पुरी क्षेत्र में आर्यसमाज मन्दिर के भवन निर्माण के लिए भूमि क्रय कर ली गई है, जिसके मूल्य भुगतान के लिए 90 दिन का समय लिया गया है। भुगतान की अन्तिम तिथि 24 जुलाई, 2017 निर्धारित की गई है।

विदित हो कि दिल्ली के झुग्गी–झोपड़ी कालोनी – जहांगीरपुर में आर्यसमाज की गतिविधियां विगत 40 वर्षों से संचालित की जा रही थीं किन्तु मन्दिर निर्माण के लिए भूमि खरीदी नहीं जा सकी थी। अब आर्यसमाज एवं सभा के सहयोग से भूमि खरीद ली गई है और इस पर लघु मन्दिर निर्माण कार्य आरम्भ किया जाना है।

इस हेतु समस्त आर्यसमाजों, दानी महानुभावों, सहयोग संस्थानों, संगठनों से सहयोग सादर अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक धनराशि का सहयोग नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से प्रदान करके पुण्य के भागी बनें।

कृपया अपनी सहयोग राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम बनवाकर सभा कार्यालय – **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भिजवाने की कृपा करें। आप चाहें तो अपनी दानराशि सीधे सभा के निम्नलिखित बैंक खाते में जमा कर सकते हैं।

कृपया राशि जमा करते ही श्री मनोज नेगी जी 9540040388 को सूचित करें तथा अपनी जमा पर्ची को सभा की ईमेल आईडी aryasabha@yahoo.com पर ईमेल कर दें ताकि रसीद भेजी जा सके।

भारतीय स्टेट बैंक
खाता सं. 33723192049
IFSC : SBIN0001639

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य	विनय आर्य
प्रधान	**महामन्त्री**

गुरुकुल पौंधा में निःशुल्क योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा, देहरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 29 मई से 4 जून 2017 तक गुरुकुल पौंधा में योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर पूर्णतः निःशुल्क है। केवल आने-जाने का मार्ग व्यय खर्च होगा। दिल्ली से पौंधा बस द्वारा आना-जाना लगभग 700/- व लोकल ट्रेन से जाने वाले शिविरार्थी अपना रिजर्वेशन स्वयं करवा लें तथा सूचना दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में अवश्य दे देवें। शिविर में रहने व भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से निःशुल्क होगी। दिल्ली से रविवार दिनांक 28 मई 2017 को रात्रि में रवाना होंगे व रविवार 4 जून 2017 को पौंधा से वापसी होगी। शिविर में जाने के लिए सम्पर्क करें- ***श्री सुखबीर सिंह, शिविर संयोजक,***

मंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा मो. 09350502175, 09540012175

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001,
मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रेस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह